



## कालभैरवाष्टकम्-देवराज सेव्यमान पावनांग्रि



<https://www.chalisa.online>

॥ कालभैरवाष्टकम् ॥

देवराज सेव्यमान पावनांग्रि पंकजं  
 व्यालयज्ञ सूत्रमिंदु शेखरं कृपाकरम् ।  
 नारदादि योगिबृंद वंदितं दिगंबरं  
 काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ 1 ॥

भानुकोटि भास्वरं भवब्धितारकं परं  
 नीलकंठ मीसितार्ध दायकं त्रिलोचनं ।  
 कालकाल मंबुजाक्ष मस्तशून्य मक्षरं  
 काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ 2 ॥

शूलटंक पाशदंड पाणिमादि कारणं  
 श्यामकाय मादिदेव मक्षरं निरामयम् ।  
 भीमविक्रमं प्रभुं विचित्र तांडव प्रियं  
 काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ 3 ॥

भुक्ति मुक्ति दायकं प्रशस्तचारु विग्रहं  
 भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोक विग्रहम् ।  
 निक्षणन्-मनोज्ञ हेम किंकिणी लसल्कटि  
 काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ 4 ॥

धर्मसेतु पालकं त्वर्धर्ममार्ग नाशकं  
 कर्मपाश मोचकं सुशर्म दायकं विभुम् ।  
 स्वर्णवर्ण केशपाश ॐओमितांग निर्मलं  
 काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ 5 ॥

रत्न पादुका प्रभाभिराम पादयुग्मकं  
 नित्य मद्वितीय मिष्ट दैवतं निरंजनम् ।  
 मृत्युदर्प नाशनं करालदंष्ट्र भूषणं  
 काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ 6 ॥

अदृहास भिन्न पद्मजांडकोश संतति  
 दृष्टिपात नष्टपाप जालमुग्र शासनम् ।  
 अष्टसिद्धि दायकं कपालमालिका धरं  
 काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ 7 ॥

भूतसंघ नायकं विशालकीर्ति दायकं  
 काशिवासि लोक पुण्यपाप शोधकं विभुम् ।  
 नीतिमार्ग कोविदं पुरातनं जगत्पति  
 काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ 8 ॥

कालभैरवाष्टकं पठति ये मनोहरं  
 ज्ञानमुक्ति साधकं विचित्र पुण्य वर्धनम् ।  
 शोकमोह लोभदैन्य कोपताप नाशनं  
 ते प्रयांति कालभैरवांग्रि सन्निधि ध्रुवम् ॥

इति श्रीमच्चंकराचार्य विरचितं कालभैरवाष्टकं संपूर्णम् ।

॥ <https://www.chalisa.online> ॥